BAOU Education for All | Dr. Babasaheb Ambedkar Open University (Established by Government of Gujarat) | NAAC ACCREDITED A++ GRADE 3.55/4 | 3rd Rank nirf 2024

A Refereed and Peer-Reviewed International e-Journal of Humanities and Social Sciences

Website: http://jyotirmay.baou.edu.in/chaitanya/ Email: chaitanya.ejournal@baou.edu.in

॥ चैतन्य ॥ CHAITANYA ISSN: 2582 2802

Year–07, Volume –07, Issue–02, June–2026

वर्षा वशिष्ठ: पितृसत्तात्मक बेड़ियों से वैश्विक क्षितिज तक की संघर्ष-यात्रा

– डॉ. दक्षा मेरैया

सारांश (Abstract):

सुरेन्द्र वर्मा द्वारा रचित उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' समकालीन हिंदी साहित्य की एक 'मील का पत्थर' कही जाने वाली रचना है, जिसने न केवल शिल्प के स्तर पर बल्कि स्त्री-चेतना के स्तर पर भी नए प्रतिमान स्थापित किए हैं। यह उपन्यास एक मध्यवर्गीय, रूढ़िवादी समाज में पली-बढ़ी स्त्री के आत्म-अन्वेषण, आर्थिक स्वतंत्रता और कलात्मक संघर्ष की महागाथा है। लेखक ने रंगमच और सिनेमा के यथार्थवादी धरातल पर एक नारी के अस्तित्व और उसके अधिकारों की लड़ाई को बखूबी दर्शाया है। यह उपन्यास मूलतः शाहजहाँपुर की एक साधारण किशोरी 'यशोदा' के 'वर्षा वशिष्ठ' बनने की दास्तान है। वर्षा का चरित्र पाठकों के सामने एक ऐसी स्त्री का बिम्ब प्रस्तुत करता है जो अपनी नियति स्वयं लिखने का साहस रखती है। उपन्यास का मुख्य केंद्र यह है कि किस प्रकार वर्षा अपने परिवेश की संकीर्णता को लांघकर अभिनय की उस ऊँचाई तक पहुँचती है, जहाँ पहुँचने की कल्पना भी उसके समाज में पाप मानी जाती थी। वह अपनी अस्मिता की खोज में किसी पुरुष का सहारा लेने के बजाय अपनी कला को ही अपना संबल बनाती है।

बीज शब्द (Keywords): साहस, अस्मिता, नैतिकता, संघर्ष, विद्रोह, पितृसत्ता, नियंत्रण, स्वाभिमान, स्वतंत्रता, मर्यादा, अनुशासन, ज्वार, अलगाव, लोकलाज, बोझ, संबल, अकेलापन, सामाजिक लांछन, आत्म-उपलब्धि, वर्जना, प्रखर, क्रांतिकारी, बहिष्कार, समझौता, अस्तित्व, समाज, कला, चेतना ।

उपन्यास के आरंभिक भाग में हम वर्षा को एक ऐसे परिवेश में पाते हैं जहाँ मध्यमवर्गीय नैतिकता और मर्यादाओं का पहरा है। उसके घर में दद्दा की उपस्थिति अनुशासन का प्रतीक है, जहाँ लड़कियों की शिक्षा और उनके विवाह के निर्णय पुरुषों द्वारा लिए जाते हैं। वर्षा का पहला विद्रोह उसके नाम परिवर्तन से शुरू होता है। यशोदा शर्मा से वर्षा वशिष्ठ बनना महज एक नाम का बदलाव नहीं, बल्कि अपनी जड़ों से कटकर एक नई पहचान गढ़ने की प्रक्रिया थी। जब उसका विवाह जबरन तय किया जाता है, तो वह स्पष्ट कहती है, **"वंश में जो नहीं हुआ, वह आगे भी न हो, यह जरुरी नहीं। यह ब्याह मैं नहीं करूंगी। तुम लोग चाहे मारो, चाहे कूटो। अगर तुम लोगों ने ज़बरदस्ती की, तो मैं कुएँ में कूद जाऊँगी।" (वर्मा 36)** यह संवाद वर्षा के उस अदम्य साहस को रेखांकित करता है जो उसे भविष्य की कठिन डगर पर चलने के लिए तैयार करता है।

वर्षा के व्यक्तित्व निर्माण में मिस कत्याल और रंगमंच की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। मिस कत्याल उसे अहसास कराती हैं कि उसके भीतर जो विद्रोह की ज्वाला है, उसे कला के माध्यम से दिशा दी जा सकती है। वर्षा जब कालिदास की 'शकुंतला' या प्रसाद की 'ध्रुवस्वामिनी' के चरित्रों को जीती है, तो वह केवल अभिनय नहीं कर रही होती, बल्कि अपनी दबी हुई आकांक्षाओं को वाणी दे रही होती है। मिस कत्याल का

यह कथन उसके लिए मार्गदर्शक बनता है: **"तुम्हारे अंदर जो ज्वार भरा है, उसे मुक्ति देने के लिए ढक्कन खोलने की ज़रूरत है।" (वर्मा 25)** यहाँ से वर्षा की यात्रा शाहजहाँपुर से दिल्ली के एनएसडी (NSD) और फिर मुंबई की मायानगरी की ओर मुड़ जाती है, जहाँ वह हर कदम पर अपनी कलात्मक शुद्धता की रक्षा करती है।

हर्षवर्धन वर्षा के जीवन में प्रेम और असुरक्षा दोनों का प्रतीक बनकर आता है। जहाँ हर्ष उसे सहारा देना चाहता है, वहीं उसके भीतर का पुरुष अहम् वर्षा की बढ़ती ख्याति को पचा नहीं पाता। वर्षा प्रेम तो करती है, लेकिन वह 'प्रेम के नाम पर समर्पण' की पारंपरिक अवधारणा को नकार देती है। जब उसे अपने करियर और हर्ष के बीच चुनाव करना पड़ता है, तो वह निष्ठुर होकर अपनी कला को चुनती है। उसका यह अलगाव उसे मानसिक रूप से तोड़ता जरूर है, लेकिन यही दुःख उसे एक महान अभिनेत्री के रूप में परिपक्व भी बनाता है।

वर्षा का चरित्र किसी बने-बनाए सांचे में फिट नहीं होता। वह हर्षवर्धन के साथ प्रेम करती है, लेकिन प्रेम के लिए अपनी कला या करियर से समझौता नहीं करती। उपन्यास में एक मोड़ ऐसा आता है जब वर्षा कुँआरी होकर भी मातृत्व को स्वीकार करती है, जो तत्कालीन समाज के लिए एक क्रांतिकारी कदम था। वह पितृसत्तात्मक समाज के उन नियमों को ठेंगा दिखाती है जो स्त्री को केवल किसी की पत्नी या माँ के रूप में देखना चाहते हैं। उसका यह संघर्ष अल्बर्ट कामू के 'एब्सर्डिज्म' (असंगतिवाद) के करीब है, जहाँ वह जानती है कि उसका 'चाँद' (पूर्णता) शायद कभी न मिले, फिर भी वह उसे पाने की कोशिश नहीं छोड़ती। वह स्वयं कहती है, **"अचानक मुझमें असंभव के लिए आकांक्षा जागी। अपना यह संसार काफी असहनीय है, इसलिए मुझे चंद्रमा चाहिए।" (वर्मा 101)**

वर्षा वशिष्ठ के व्यक्तित्व का सबसे प्रखर और विद्रोही रूप तब उभरकर सामने आता है, जब वह विवाह की संस्था को स्वीकार किए बिना मातृत्व का वरण करती है। एक मध्यवर्गीय परिवार से निकलकर आई स्त्री के लिए 'कुँआरी माँ' बनना न केवल सामाजिक बहिष्कार को न्योता देना था, बल्कि तत्कालीन नैतिक मूल्यों को सीधी चुनौती देना भी था। वर्षा का यह निर्णय किसी मजबूरी का परिणाम नहीं, बल्कि उसके स्वतंत्र अस्तित्व का सचेत चुनाव है। वह समाज द्वारा थोपे गए 'पवित्रता' के उन पैमानों को सिरे से खारिज कर देती है जो स्त्री की देह और उसके निर्णयों पर पुरुषों या समाज का नियंत्रण चाहते हैं। उपन्यास के इस मोड़ पर वर्षा का चरित्र पितृसत्तात्मक ढांचे की ईंट से ईंट बजा देता है। वह सिद्ध करती है कि एक स्त्री अपने जीवन के सबसे बड़े और व्यक्तिगत फैसले लेने के लिए किसी पुरुष के हस्ताक्षर या सामाजिक स्वीकृति की मोहताज नहीं है। समीक्षक डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी जी की टिप्पणी है कि- **"स्त्री पर पड़ी पुरुष वर्जनामूलकता को खत्म करना भी जरूरी मुद्दा है, जो पूरी हिम्मत व साफ सोच-समझ के साथ वर्षा वशिष्ठ करती है। बचपन से लेकर अंत तक स्त्री होने के नाते करणीय-अकरणीय के सभी पारस्परिक विधि-निषेधों को तोड़ने के सफल प्रयत्न इसके प्रमाण हैं।" (त्रिपाठी 121)** अतः स्पष्ट होता है कि वर्षा का यह कदम भारतीय नारीवाद को एक नई दिशा देता है, जहाँ मातृत्व बोझ या लोकलाज का विषय नहीं, बल्कि एक स्त्री की अपनी इच्छा और सामर्थ्य का उत्सव बन जाता है। नायिका वर्षा के चरित्र के संबंध में प्रसिद्ध समीक्षक डॉ. रोहिणी अग्रवाल का कथन है कि- **"'मुझे चाँद चाहिए' वर्षा वशिष्ठ के औदात्य और उन्नयन का आख्यान है, जो परंपराओं, वर्जनाओं और**

पुरुष की बैसाखियों को झटककर अपनी स्वतंत्रता स्थापित करने वाली संघर्षशील आधुनिक स्त्री का मिथ रचती है।" (अग्रवाल 113)

दिल्ली के रंगमंच से मिली प्रशंसा के बाद जब वर्षा मुंबई की ओर कदम बढ़ाती है, तो उसका सामना एक ऐसी दुनिया से होता है जो कला से अधिक व्यावसायिकता पर टिकी थी। यहाँ का संघर्ष उसके लिए केवल काम पाने का नहीं, बल्कि अपनी गरिमा को बचाए रखने का भी था। उपन्यास के एक प्रभावशाली दृश्य में, जब वर्षा अपना पहला बड़ा ऑडिशन देने जाती है, तो उसे निर्देशकों की उस वस्तुनिष्ठ दृष्टि का सामना करना पड़ता है, जहाँ प्रतिभा से पहले देह को तौला जाता है। वर्षा समझौता करने के बजाय अपनी शर्तों पर डटी रहती है। उसका वह संवाद उसकी मानसिकता को स्पष्ट करता है– **"मैं यहाँ अपनी आत्मा का प्रदर्शन करने आई हूँ, मात्र शरीर का नहीं।" (वर्मा 148)** यह दर्शाता है कि वर्षा के लिए 'चाँद' का अर्थ केवल प्रसिद्धि पाना नहीं था, बल्कि उसे स्वाभिमान के साथ अर्जित करना था।

वर्षा वशिष्ठ का चरित्र आधुनिक भारतीय स्त्री के उस आत्म-अन्वेषण का प्रतीक है जो अपनी सफलता की कीमत चुकाने से भी पीछे नहीं हटती। वह चाँद यानी शीर्ष सफलता को पा तो लेती है, लेकिन उस ऊँचाई पर वह नितांत अकेली है। सुरेन्द्र वर्मा ने वर्षा के माध्यम से यह संदेश दिया है कि कला की साधना और स्त्री की स्वतंत्रता का मार्ग काँटों भरा है, लेकिन जो इस पर चलने का साहस करता है, वही इतिहास रचता है। वर्षा केवल एक नायिका नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति की आवाज है जो अपनी सीमाओं को लांघकर आकाश छूना चाहता है।

संपूर्ण विश्लेषण के उपरांत यह कहा जा सकता है कि सुरेन्द्र वर्मा ने 'मुझे चाँद चाहिए' के माध्यम से वर्षा वशिष्ठ के रूप में एक ऐसी कालजयी नायिका गढ़ी है, जो समय के साथ और अधिक प्रासंगिक होती जा रही है। वर्षा की यात्रा शाहजहाँपुर की तंग गलियों से शुरू होकर अंतरराष्ट्रीय मंचों तक की वह यात्रा है, जहाँ 'चाँद' की चाहत उसे निरंतर जलते रहने और चमकते रहने की प्रेरणा देती है। वह एक ऐसी अभिनेत्री है जिसने अपनी निजी जिंदगी के दुखों, अकेलेपन और सामाजिक लांछनों को अपनी कला के ईंधन में बदल दिया। उपन्यास के अंत में यह स्पष्ट होता है कि वर्षा का 'चाँद' कोई भौतिक वस्तु नहीं, बल्कि वह चरम आत्म-उपलब्धि है जहाँ पहुँचकर एक स्त्री स्वयं की स्वामिनी बन जाती है। वर्षा वशिष्ठ आज की पीढ़ी के लिए यह संदेश छोड़ती है कि सफलता की राह में समझौते भले ही आसान लगें, लेकिन अपनी शर्तों पर जी गई जिंदगी ही अंततः सार्थक और गौरवशाली होती है।

संदर्भ सूची :

1. वर्मा, सुरेंद्र, मुझे चाँद चाहिए, भारतीय ज्ञानपीठ, 2020
2. त्रिपाठी, डॉ. सत्यदेव, हिन्दी उपन्यास : समकालीन विमर्श, अमन प्रकाशन, 2012
3. अग्रवाल, डॉ. रोहिणी, सं. प्रभाकर श्रोत्रिय, नया ज्ञानोदय, भारतीय ज्ञानपीठ, 2004

डॉ. दक्षा मेरैया, भाषा-शिक्षक, पू.ग.प्रा.शा., बोटाद
Email: daxameraiya9@gmail.com